स्वर्ग में एक सीट खाली है

पात्र परिचय

1– नारायण 2– नारद

3– बुढ़िया 4–सेठ

5–बेरोजगार युवा 6–गरीब भिखारी

7–संयासी

नारद– नारायण, नारायण, नारायण,

नारायण– अरे नारद! क्या हुआ? कहॉ से इतने परेशान होकर आ रहे हो? क्या हो गया?

नारद– अरे प्रभु क्या बताऊँ! क्या एक गिलास पानी मिलेगा? हाल बहुत बुरा है,मुझसे से तो देखा नहीं गया इसलिए मैं आपके पास दौड़ा चला आया,प्रभु आप कुछ करिये, कुछ करिये प्रभू।

नारायण– हॉ–हॉ, अरे भाई नारद जी को सूबीरस पिलाओ। हॉ अब बताओ क्या नहीं देखा गया? कहॉ की बात कर रहे हो?

नारद– मैं त्रिलोक भ्रमण पर निकला था,सोचा पहले धरती लोक देख लेता हूँ, पर मैं तो वहॉ की मुसीबत को देखते ही भाग खड़ा हुआ।

नारायण– क्यों वहॉ क्या हो गया? कौन सी मुसीबत आ गयी है?

नारद– अरे क्या बताऊँ प्रभु ! यहॉ तो स्वर्ग है स्वर्ग! धरती लोक में क्या–क्या होता है, कुछ आपको पता नहीं पड़ता। 5000 वर्ष पुराने मेरे एक इष्ट के यहॉ पार्टी थी सोचा था कि उससे भी मिल लेंगें,लेकिन रास्ते के दर्दनाक मंजर देख, मेरे प्राण सूखने लगे और उनके दुखभरी जिन्दगी को कुछ राहत देने के लिए आपके पास चला आया।

नारायण– अरे ! क्या हुआ? धरती लोक पर कुछ गड़बड़ हो गया है क्या?

नारद– अरे प्रभु! आप गड़बड़ की बात कर रहे हैं वहॉ तो सब गड़बड़ ही गड़बड़ है।

नारायण– अच्छा ! हमें तो इसकी कोई सूचना नहीं,कोई मिसकॉल भी नहीं आयी है । अब तुम्हीं बता दो कि वहॉ क्या हो रहा है?

नारद– प्रभु मैं क्या–क्या बताऊँगा? एक बार स्वयं चलकर देख ले तो सब समझ जायेंगें। आप बस मेरे सथ चलिये।

नारायण– नहीं–नहीं नारद अभी निकलना बिल्कुल ही नहीं हो सकता, क्योंकि कल्प के अन्त का भी अन्त है, पूरे संसार के अरबों लोगों का हिसाब फाइनल करना है। नये युग की पूरी सेटिंग करनी है, तुम्हीं बता दो।

नारद– अरे प्रभु क्या–क्या सुनायें? छोटे –2 बच्चों को बड़ी –2 बीमारियाँ लगी पड़ी हैं,लाखों रूपये की दवायें चाहिए और घर में खाने को नहीं,जहाँ घी–दूध की नदियाँ बहती थी वहाँ खून की नदियाँ बह रही हैं,जहाँ शेर–गाय एक घाट पर पानी पीते थे वहाँ आज घर–घर में महाभारत छिड़ी है, जहाँ सोने–चाँदी के महल थे वहाँ आज सिर पर छत नसीब नहीं है,प्रकृति के प्रकोप ने आज मनुष्य को तोड़ कर रख दिया है,आजकल इतनी गर्मी हो रही है, जो सारा खून पसीना बनकर निकला जा रहा है। प्रभु मुझे उनकी बेबसी व दर्द देखा नहीं गया तो मैं आपके पास आ गया ।

नारायण– तो इसमें भला मैं क्या कर सकता हूँ नारद!

नारद– अरे प्रभु आप तो सब कुछ कर सकते हैं,आप उस दुनिया को भी स्वर्ग बना सकते हो।

नारायण– नारद मैं उस पतित दुनिया में पैर भी नहीं रखता।

नारद– तो फिर उन सबको यहाँ बुला लीजिए।

नारायण– उनका यहाँ रहने का पार्ट ही नही है।

नारद– अरे पार्ट क्या होता है प्रभु? उनके दुःख से आपको कुछ नहीं हो रहा? इसीलिए कहता हूँ एक बार देखेंगें, तो सब समझ में आ जायेगा।

नारायण– ऐसा नहीं है नारद तुम्हें लग रहा है, पर उन्हें वहीं आनन्द आ रहा है।

नारद– आप भी कैसी बातें करते है प्रभू? मैंनें उन्हें खुद चिल्लाते हुए देखा है, अच्छा ऐसा करें उन्हें यहाँ बुला लीजिए?

नारायण– एक तो वह यहाँ आ भी नहीं सकते, दूसरे उन्हें वहीं मजा है वो यहाँ आना भी नहीं चाहते।

नारद– प्रभु आप किस भ्रम में हैं ? एक बार परमीसन देकर तो देखिये, सारा धरती लोक खाली हो जायेगा।

नारायण– मैं सच कहता हूँ, अच्छा मेरे पास स्वर्ग में एक सीट खाली है,जाओ धरती से किसी एक व्यक्ति को ले आओ।

नारद– इतने करोंड़ों मनुष्यों में से एक को कैसे लाऊँ?

नारायण– तुम पहले जाओ तो,एक को ले आओ बाकी का हिसाब बाद में देखेंगें,वैसे तुम्हारे साथ एक भी आने वाला नहीं,तुम खाली हाथ ही आओगे।

नारद– अरे प्रभु एक को तो क्या मैं सैकड़ों को चुटकी बजाते ला सकता हूँ। मैं चला,नारायण,नारायण,नारायण।

बुढ़िया– खॉसते हुए.....हे भगवान, ये खॉसी तो मेरे प्राण ही लेकर जायेगी, क्या करूँ? कोई है? कहॉ मर गये सब? कोई सुनता ही नहीं? सात–सात बच्चे और सब इतने अमीर, पर मेरे लिए न किसी के घर में जगह है न दिल में ,पेट पर पट्टी बॉध कर, इन सबको पढ़ाया–लिखाया, इतने अरमानों से सबकी शादी की, कि सबको आराम हो जाये, पर आज हमें ही गैराज में नौकरों की तरह डाल रखा है, हे प्रभु अब मुझे अपने पास बुला लो, मुझे नहीं रहना इस नर्क में, आज मेरे साथ जैसा हुआ, उसके बाद तो मैं एक पल भी नहीं रहना चाहती, हे भगवान मुझे आज ही इस दुनिया से उठा ले।

नारद– नारयण 2, अरे ये माता तो तैयार बैठी हैं, माता जी कैसी हो?

बुढ़िया – अरे कैसी हूँ! अपने भाग्य को कोस रही हूँ और भगवान से प्रार्थना कर रही हूँ, कि मेरे लिए ना तो मेरे बच्चों के पास समय है ना ही रोटी, क्या– क्या सोचा था, क्या–क्या देखना पड़ रहा है।

नारद – अरे माता जी तुम परेशान ना हो, आज कल का यही दस्तूर है कि बूढे मां बाप को पुराने कपड़े की तरह छोड़ देते हैं, पर तुम चिंता मत करो मेरे पास तुम्हारे लिए एक खुशखबरी है।

बुढ़िया – अरे बताओ बताओ, भगवान बड़ा दयालु हैं, मेरी दर्द की पुकार उसने सुन ही ली, क्या मेरे बेटों ने तुमसे मुझे अपने पास रखने के लिए कहें हैं?

नारद – नही 2 माता जी, मैं तो स्वर्ग लोक से आया हूं, वहां एक सीट खाली है, तुम मेरे साथ चलो, वहां सब सुख होगें, तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी।

बुढ़िया – क्या तुम स्वर्ग लोक से आये हो मुझे ले जाने, बेटा क्या मैं तुम्हें इतनी गयी गुजरी लग रही हूं? अरे दुनिया में तुम्हें और कोई नही मिला? मेरी पड़ोसी तो मुझसे ज्यादा बूढ़ी है और उसके बच्चे तो उसे मारते भी हैं, उसे मेरे से ज्यादा जरूरत है, ये नेक काम उसके साथ कर दो।

नारद– पर माता जी, अभी तो आप खांसी से परेशान थी, बच्चों से परेशान थी, भगवान से उठाने की प्रार्थना कर रही थी,अब क्यों नहीं जाना चाहती ?

बुढ़िया – अरे वो तो मैं झूठ – मूठ में, घर वालों को दिखाने के लिए कर रही थी, और अभी मैं बाल काले कर लूँगी तो 40 से ज्यादा नहीं लगूँगी, रही खाँसी की बात, ये तो सुबोध डॉ की क्लीनिक में दवा ले लूँगी, एक ही दिन में चंगी हो जाउँगी।

नारद– पर यहाँ से स्वर्ग में कितना अच्छा है, आप वहाँ बहुत सुखी रहेंगी ।

बुढ़िया – अरे तू मेरे पीछे क्यों पडा हैं? इतनी बड़ी दुनिया है, तुम्हें मैं ही मिली हूँ, सारे संसार को उठा ले जा, पर मुझे बख्स दे।

नारद– नारायण,नारायण नारायण..............। लेकिन माता जी राज क्या है यहाँ के सुख में? मुझे कान में बता दो मैं किसी को बताऊँगा नहीं,और चला जाऊँगा।

बुढ़िया – अरे देख किसी को बताना नहीं, मेरे 42 वें पोते की अगले महीने बहू आने वाली है,मुझे उसका मुँह देखना है।

नारद – जब आपको कोई पूँछता नहीं, तो फिर क्यों आप बेटा– बहू के चक्कर में पड़ती हैं?

बुढ़िया – अरे नारद! जमाना कैसा चल रहा है,इतना ही बहुत है, अपना इतना भरा पूरा परिवार देख कर ही मुझे बड़ी खुशी होती है, जैसे भी हैं ,पर मेरे हैं, परिवार का सुख क्या होता है तुझे लगता पता नहीं?

नारद – ठीक है माता जी चलता हूँ ,आप अपनों का सुख लीजिए। मौत के दरवाजे पर पैर लटकने के बावजूद भी मकड़ी की तरह परिवार का जाल फैला रखा है। ठीक है मुझे क्या ! अभी तो सारी दुनिया पड़ी है। सेठ –हे भगवान! मैं लुट गया,बरबाद हो गया! अब गृहस्थी कैसे चलेगी? मैं तो पागल हो जाऊँगा! मैं क्या करूँ? मैं अब इस दुनिया में नहीं रहना चाहता,मुझे इस दुनिया से उठा लो प्रभू!

नारद– ये व्यक्ति तो बहुत परेशान लगता है। ये तो तुरन्त चल देगा। नारायण,नारायण नारायण.............. क्या हुआ महाशय? बड़े परेशान लग रहे हो?

सेठ– अरे तुम कौन हो? तुम कहाँ से आ गये? अन्दर कैसे आये?

नारद– अरे मुझे नहीं पहचानते? मैं नारद हूँ नारद,स्वर्ग लोक से आया हूँ ।

सेठ– वही, जो बिना पूँछे ही सब जगह पहुँच जाते हो,हॉ–हॉ याद आया, छोटा था तो टी0 वी0 में देखा था। चलो अच्छे टेम पर आये हो।

नारद– पर तुम इतना परेशान क्यों हो?

सेठ– अब तुमसे क्या छिपाना नारद जी, मैने अपना सारा पैसा पान मसाले एवं पन्नी के विजनेस में लगा रखा था क्योंकि यही धन्धे टिकाऊ और झरटि से चलने वाले लग रहे थे,पर हाय मेरी किस्मत! सरकार ने दोनों पर बैन लगा दिए ,मेरा सारा विजनेस चौपट हो गया।मैं तो बर्बाद ही हो गया,अब कुछ समझ में नही आ रहा कि क्या करूँ? कहॉ जाऊँ ? मैं पागल हो जाऊँगा,बच्चों के इतने खर्चे हैं कैसे होगा?

नारद– तुम्हारे धन्धे को तो मैं कुछ नहीं कर सकता, पर तुम्हें सुख दिखा सकता हूँ , तुम्हारे लिए मेरे पास एक लॉटरी है।

सेठ– अरे भगवान को मैं फालतू में गाली दे रहा था वे तो बड़े दयालू हैं उन्होंने ही तुम्हें यहॉ भेजा होगा? वे बड़े रहमदिल हैं, दीनों के नाथ हैं,बताइये, जल्दी बताइये।

नारद – कान में चुपके से, स्वर्ग में एक सीट खाली है,तुम मेरे साथ जल्दी से चलो,वहॉ न कोई धन्धा न कोई घाटा,बस मजे ही मजे हैं।

सेठ – अरे ये तुम क्या बोल रहे हो ! मेरा धन्धा सरकार क्या बन्द करेगी ? मेरे पास 10 धन्धे हैं, और 100 जुगाड़ हैं , और मेरे पास हुनर है हुनर, तुमने मुझे क्या समझ रखा है? किसी और को पकड़ो। मुझे तो तुम स्वर्ग के एजेन्ट लगते हो? मैं पुराना व्यापारी हूँ पुराना! इतनी जल्दी सरकार के झॉंसें में आने वाला नहीं,कच्चा खिलाड़ी नहीं हूँ

नारद– पर अभी तो आप भगवान से इस दुनिया से उठा लेने की बात कर रहे थे,बर्बादी पर ऑसू बहा रहे थे,परिवार चलाने के लाले पड़े थे फिर क्यों नहीं जाना चाहते?

सेठ– अरे नारद जी ये तो सरकार से टैक्स और बच्चों से पैसे बचाने का तरीका है। मेरे पास तो इतना धन है कि मेरी सात पीढ़ियॉ बैठे–बैठे आराम से खा सकती हैं पर ये आजकल के लड़के सात पीढ़ियों का पैसा एक पीढ़ी भी नहीं चलने देती,ऐसे मूर्ख बच्चे मेरे ही पल्ले पड़े हैं भगवान ऐसे बच्चों से मुझे बचाये।

नारद– इसीलिए तो मैं कहता हूँ,मेरे साथ स्वर्ग चलें,बच्चों के लफड़े बच्चे जाने,वहॉ सब कुछ अच्छे से अच्छा है।

सेठ– तुम्हें क्या पता! मेहनत की कमाई ऐसे किसी को क्यों दे दूँ।दूसरा मेरे यहॉ किस चीज की कमी है? स्वर्ग में तो तुम उन्हें ले जाओ जो नर्क में हैं, मेरा घर किसी स्वर्ग से कम है

क्या? एक बार अगर तुम मेरी प्रापर्टी जान जाओ तो स्वर्ग का रास्ता भूल जाओगे। मुझे माफ करो,मैं वैसे ही पहले से परेशान हूँ तुम और चले आये जले पर नमक छिड़कने ।

नारद– नारायण,नारायण नारायण..............। कैसे लोग हैं? परेशान होते हुए भी माया मोह नहीं छोड़ रहे। खैर मुझे क्या,अभी तो सारी दुनिया पड़ी है।

युवा– (किताबें पटकते हुए)अब मुझसे कुछ नहीं हो सकता,आखिर कितने दिन पढ़ेंगे? क्या सारी जिन्दगी पढ़ते ही रहेंगें? इससे ज्यादा मैं नहीं पढ़ सकता,मैं अब कुछ नहीं कर सकता,अब मौत को गले लगाने के सिवा मेरे पास कोई चारा नहीं,(सिर पकड़ते हुए) हे ईश्वर मेरे साथ ही ये नाइंसाफी क्यों ? अब मैं ये नही झेल सकता,अब मैं जीना नही चाहता।

नारद– ये कुछ ज्यादा ही परेशान लग रहा है,और पढ़ा लिखा भी लग रहा है ये जरूर मेरे साथ चलेगा। नारायण,नारायण नारायण.............. (उसका सिर ऊपर उठाते हुए) क्या हुआ तुम बड़े परेशान लग रहे हो?

युवा– अरे नारद जी आप यहॉ कैसे?

नारद– पहले तुम बताओ इतना परेशान क्यों हो?

युवा– नारद जी आप भारत ही नहीं सारी दुनिया के पहले पत्रकार हैं पर आज तक सबसे ज्वलन्त खबरें सामने आती ही नहीं,युवाओं की बढ़ती बेरोजगारी,कहीं सिफारिस, कहीं आरक्षण,रिश्वत इसके बिना मेहनत का कोई मतलब नहीं। मॉ–बाप अपने सपनों को हमारे सपनों में साकार करने के लिए अपनी गाढ़ी कमाई पानी की तरह खर्च करते हैं और हम भूख– नींद सब छोड़ दिन रात बस पढ़ाई–पढ़ाई में सिर खपाते रहे,नतीजा आज, बहुत मूल्य लगाकर बिना मूल्य के कागज के कुछ सर्टीफिकेट, जिनको अगर बेचा जाये, तो 2 रू0 शायद ही कोई दे,इसलिए नारद जी अब मौत के सिवा कुछ नजर नहीं आ रहा।

नारद–नारायण,नारायण नारायण..............तुम फिकर मत करो मेरे पास तीनों लोकों की न्यूज रहती है,स्वर्ग मे एक वैकेन्सी है मैं तुम्हें अपनी जवाबदारी पर ले चलता हूँ,वह सीट तुम्हें फ्री में मिल जायेगी,मेरे साथ चलो।

युवा– नारद जी एक तो मुझे पत्रकारों की बात पर बिल्कुल भरोसा नहीं,खैर मैं अभी जाना भी नहीं चाहता।

नारद– पर क्यों? अभी तो तुम मौत को गले लगाने जा रहे थे,अब क्यों डरने लगे?

युवा– मैं किसी से नहीं डरता,ये तो सरकार और समाज से अपनी बात मनवाने का तरीका है,ये लोग सीधे–साधे लोगों को तवज्जो कहॉ देते हैं।खैर अभी तो हमें बहुत कुछ करना है,यहॉ ऐसी कौन सी चीजें नहीं हैं जो आपके स्वर्ग में हैं? हम तो कहते हैं कि आज के वैज्ञानिक युग में जो बात है वह वहॉ कहॉ? मुझे माफ करें नारद जी,आपके साथ मेरा बहुत टाइम वेस्ट हो गया,अभी मुझे बहुत प्लैन बनाने हैं।

नारद– नारायण,नारायण नारायण.............. ये कैसी दुनिया है,यहॉ के लोगो से कोई पार नहीं पा सकता,सबके सब इतने परेशान होने के बावजूद दिखाते ऐसे हैं कि स्वर्ग से ज्यादा सुख इनके घर में हों।

भिखारी– भगवान सबका भला करे,अल्लाह सबको दे,छप्पर फाड़ के दे,आकाश काट के दे,धरती खोद के दे,उसमें से 5%हमको भी दिलवा दें।मनुष्य आजकल बड़ा चालाक हो गया है,हमारी कटौती कर–कर अपनी इनकम बढ़ाता जा रहा है। ये पॉच सौ रूपल्ली में क्या होगा? मैं क्या करूँ भगवान? घर वाले अलग,मित्र मंडली अलग, सबके सब कल अपनी उधारी मॉगेंगें,मैं कहॉ से दूँ? क्या करूॅ,भगवान इन लोगों से पिटने से अच्छा है कि आप मुझे अपने पास बुला लें। बड़ा ही दुखी होकर सिर पकड़कर बैठता है।

नारद– नारायण,नारायण नारायण..............ये तो बहुत ही दुखी दिखाई दे रहा है,ये तो मेरे साथ फटाफट चल देगा। अरे भाई क्या हुआ? बड़े दुखी लग रहे हो।

भिखारी–अरे तुम कहॉ आ टपके? कौन हो तुम?

नारद– नारायण,नारायण नारायण..............मुझे नहीं पहचानते! मैं तीनों तल पर चलने की क्षमता वाला एकमात्र प्राणी हूँ,वैसे मैं सबसे बड़ा नम्बरवन भक्त भी हूँ। नारद को तो तीनों लोक जानते हैं।

भिखारी– अच्छा तो तुम नारद हो? अब क्या बताऊँ नारद जी,मेरा लाखों रूपया मार्केट में फॅसा पड़ा है,लोग कल–कल करके मुझे टहला रहे हैं,सबके अपने काम धड़ल्ले से चल रहे हैं मेरा देने में गला सूखता है। आजकल इतनी मॅहगाई है कि गुजारा ही नहीं हो रहा है,आपका धन्धा तो हजारों सालों से रफ्तार से चलता आ रहा है,हमें देखो इंटरनेट बैंकिंग,केटिड कार्ड एवं ए.टी.एम. के जमाने में गली–2में भटकना पड़ता है। हमारा धन्धा तो लॉस में जा रहा है।

नारद– तुम परेशान न हों,मेरी नजर में एक जगह ऐसी है जहाँ पैसे तो क्या सोने हीरे पर भी ताले नहीं लगेंगें,मैं तुम्हें वहाँ शिफ्ट करवा सकता हूँ।

भिखारी–अरे नारद जी नेकी और पूँछ–2 कर, झटापट बताइये मैं फटाफट तैयार हो जाता हूँ।

नारद– स्वर्ग में एक सीट खाली है, तुम चलो मेरे साथ।

भिखारी– क्या कहा स्वर्ग ? वहाँ जाये मेरे दुश्मन,मैं तुम्हारा नौकर हूँ क्या जो तुम मुझे शिफ्ट कर रहे हो,मैं आजाद उड़ता पंछी हूँ,तुम मुझे ऐसा देख कर भिखारी समझ रखे हो क्या? अनेको का भाग्य बनाने का एजेन्ट हूँ,तुम्हारे जैसे फ्री नहीं घूमता हूँ,मैं घमू–घूम कर भी लोगों को कई जन्मों तक के लिए मालामाल बना रहा हूँ।

नारद– अभी तो तुम अपनी तकदीर पर आँसू बहा रहे थे, अब लोगों का परलोक बना रहे हो?

भिखारी– मैं भिखारियों का लीडर हूँ,लोगों से जबरदस्ती दान करवा के उनका भाग्य ही तो बना रहा हूँ क्योंकि वह लोग खुद तो अपना भाग्य बनाते नहीं।

नारद– पर अभी तो तुम बड़े परेशान लग रहे थे,स्वर्ग में तो तुम बहुत सुखी रहोगे।

भिखारी– ये तो लोगों से पैसा निकलवाने और दोस्तों से बचाने की मेरी योजना है, जो मजा मैं यहाँ ले रहा हूँ वह स्वर्ग में कहाँ ? नित नये फैशन बदलते कपड़े,पलक झपकते काम करने वाले गैजेट्स,हर गम को भुलाने वाले पेय,जो दूसरी दुनिया के नजारे यहीं बैठे–2 दिखाते हैं,क्रिकेट,फिल्में,चेहरे की शोभा बढ़ाने वाले चश्में भला वहाँ होगें? नारद जी हमें तो माफ करें, मैं स्वर्ग में बोर हो जाऊँगा।

नारद– नारायण,नारायण नारायण.............मानव को समझना कितना मुश्किल है,ये दो कौड़ी का इंसान और कितना ऊँचा अभिमान,भगवान बचाये मुझे ऐसे लोगों से,मैं कहाँ इनके चक्कर मे आ गया! मैं तो चला वापस।

सन्यासी– ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय, झूठी माया झूठी काया झूठा सब संसार......
...एक घड़ी आधी घड़ी,आधी में पुनआधि,ओ दूर के मुसाफिर हमको भी साथ ले ले.............।

नारद– अरे सन्यासी बड़ा वैरागी लगता है, दिल से भगवान को पुकार रहा है।यह तो जाने के लिए तैयार बैठा है, बस इससे एक बार पूँछ लेता हूँ, कहो सन्यासी जी कैसे हो? तपस्या कैसी चल रही है?

सन्यासी– एवन ,नारद जी आप सुनाइए आज मृत्युलोक में कैसे?

नारद – ऐसे ही निकल रहा था सोचा तुमसे मिलता चलूँ।

सन्यासी– अच्छा किया,अरे भाई नारद जी को ठण्डई पिलाओ।

शिष्य– गुरू जी आई0पी0एल0 शुरू हो गया है।

सन्यासी– अच्छा मैच शुरू हो गया है,आज के मैच में मेरा काफी सट्टा लगा हुआ है,माफ करना नारद जी,फिर कभी मिलेंगें,अभी हमारे मनोरंजन व कमाई का समय हो गया है,मनोरंजन क्या धन्धे का टाइम हो गया है।

नारद– क्या आप लोग इन सबमें रूचि रखते हो, मैं तो कुछ और ही सोच के आया था ?

सन्यासी– क्या सोच के आये थे,अगर हम लोग धन्धा नहीं करेंगें तो क्या इस आधुनिक युग में सब ऐसे ही मिल जायेगा ?

नारद– अरे हमने तो सोचा था कि स्वर्ग में एक सीट खाली है,उसके लिए आप से बेहतर और कौन हो सकता है ?

सन्यासी– अरे नारद जी वो हजारों साल पुराना स्वर्ग आपको ही मुबारक हो,मुझे और किसी स्वर्ग की इच्छा क्या करना,चलो तुम भी मेरा स्वर्ग देख लो।

नारद– नहीं–नहीं मुझे नहीं देखना,अभी भी सोच लो ?

सन्यासी– अरे सोचना क्या ? आपको आना है तो आइये मैच शुरू हो गया है,मैं अब एक पल भी नहीं रूक सकता,जय शिव शम्भू, जय शिव शम्भू......

नारद – वाह रे धरती के इंसान,धर्म और ईमान दोनों बेचकर, संसार को रौरव नर्क बना डाले। नारद–नारायण,नारायण नारायण.............मैं भी किस चक्कर में यहॉं आ गया ? नारायण,नारायण नारायण.............मै तो अब इस धरती लोक की ओर कभी न आऊॅं। नारायण,नारायण नारायण..............

नारायण–क्या हुआ नारद जी कोई आया ?

नारद– प्रभु सब कुछ संभव है पर मनुष्य को माया मोह से छुड़ाना असंभव है,कितनी मूर्खता वाली जीवन है।

नारायण– नहीं नारद ,यही उनकी नियति है,विनाश काले विपरीत बुद्धि,और कर्म सिद्धान्त के अनुसार उनका स्वर्ग में पार्ट ही नही है तो वे आयेंगें भी कैसे ? ऐसा करो अब कभी उधर से निकलना तो भगवान का पैगाम जरूर दे आना,कि भगवान धरती पर आ चुके हैं उनसे सुख शान्ति का वर्सा पाने के लिए ब्रह्माकुमारीज में एक बार अवश्य पधारें।

नारद– ना–ना प्रभु, अब भूलकर भी मनुष्य के चक्कर में नही पड़ना चाहता,हॉं ऊपर से पर्चे जरूर गिरा दूँगा, बाकी इंसानों से तो भगवान बचाये।

ओमशान्ति